

## प्रवासी भारतीय क्रांतिकारी श्याम जी कृष्ण वर्मा

और

### भारतीय स्वतन्त्रता का वैश्विक आयाम

अंजलि, शोधार्थी, इतिहास विभाग, एम.एम.कॉलिज मोदीनगर, गाजियाबाद, उत्तर-प्रदेश।

डॉ. सुनीता सिरोही, इतिहास विभाग, एम.एम.कॉलिज मोदीनगर, गाजियाबाद, उत्तर-प्रदेश।

#### **शोध सारांश:-**

यह शोध पत्र भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में श्याम जी कृष्ण वर्मा की क्रांतिकारी भूमिका और इसके वैश्विक आयामों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। श्याम जी कृष्ण वर्मा (1857 ई०-1930 ई०) एक प्रखर विद्वान, पत्रकार और क्रांतिकारी ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को अन्तर्राष्ट्रीय मंच प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने 1905 ई० में लंदन में इंडियन होमरूल सोसाइटी और इंडिया हाऊस की स्थापना की। जो भारतीय छात्रों और क्रांतिकारियों के लिए राष्ट्रवादी गतिविधियों का केंद्र बना। उनकी पत्रिका दृ इंडियन सोशियोलॉजिस्ट (1905 ई०-1922 ई०) ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ क्रांतिकारी विचारधारा को प्रचारित किया और औपनिवेशिक विरोध को वैशिवक स्तर पर मजबूत किया।

इस शोध पत्र का उद्देश्य श्यामजी के कार्यों के माध्यम से भारतीय राष्ट्रवाद के वैश्विक प्रसार और आयरलैंड, अफ्रीका जैसे अन्य औपनिवेशिक आन्दोलनों पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन करना है। ऐतिहासिक दस्तावेजों, पत्रिकाओं और समकालीन साहित्य के विश्लेषण पर आधारित यह शोध पत्र दर्शाता है कि श्यामजी ने भारतीय युवाओं को क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित कर ब्रिटिश शासन के खिलाफ वैशिवक जागरूकता उत्पन्न की। उनके प्रयासों ने विनायक दामोदर सावरकर और मदनलाल ढींगरा जैसे क्रांतिकारियों को चुनौती दी। श्यामजी के कार्यों ने आयरिश होमरूल मूवमेंट और अफ्रीकी स्वतन्त्रता आन्दोलनों के साथ ट्रांसनेशनल एकजुटता को बढ़ावा दिया। यह शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को वैरिवक परिप्रेक्ष में समझने और श्यामजी जैसे उपेक्षित क्रांतिकारियों के योगदान का पुनः मूल्यांकन करने और औपनिवेशिक विरोध के इतिहास में नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण योगदान देगा है। यह शोध पत्र इतिहासकारों और शोधकर्ताओं के लिए भारतीय राष्ट्रवाद के वैश्विक संदर्भ को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करेगा है।

#### **की-वर्ड्स:-**

श्यामजी कृष्ण वर्मा, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम, इंडिया हाऊस, वैश्विक राष्ट्रवाद, क्रांतिकारी आन्दोलन, औपनिवेशिक विरोध, ट्रांसनेशनल राष्ट्रवाद।

## श्यामजी कृष्ण वर्मा का प्रारम्भिक जीवन और शिक्षा

प्रवासी क्रांतिकारी आंदोलन में सन्देह दुनिया के सबसे बड़े जनसंघर्षों में से एक था, जिसने सभी वर्गों और विचारधाराओं के लाखों लोगों को अंग्रेजों के खिलाफ एक राजनीतिक कार्य वाही के लिए प्रेरित किया। समय के साथ-साथ भारतीयों ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए भारत और विदेशों में कई सगठनों की स्थापना की। श्याम जी कृष्ण वर्मा भी उन क्रांतिकारियों में से एक थे। श्याम जी कृष्ण वर्मा ऐसे प्रथम भारतवासी हैं, जो भारत को स्वतन्त्रता करने के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन का बलिदान कर दिया।<sup>1</sup> श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 ई० को भारत के पश्चिम में स्थित कच्छ रियासत के मान्दवी नामक गाँव के धांसली परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम करसन भानुशाली और माता का नाम गोमती बाई था। इनका परिवार गाँव का नितान्त साधारण परिवार था। मेहनत मजदूरी करके इनके पिता परिवार का पालन पोषण करते थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मांडवी और भुज में हुई। जहाँ इन्होंने संस्कृत और वेदों का गहन अध्ययन किया। अपनी विद्वता के कारण इन्हें पंडित की उपाधि प्राप्त हुई।<sup>2</sup>

प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् श्याम जी कृष्ण वर्मा अपने पिता के साथ बम्बई चले गए। जहाँ उनके पिता ने एक सौदागर के दफ्तर में नौकरी काली, पिता बम्बई में ही श्याम जी को अपने पास रखना चाहते थे। ताकि उनको अच्छी शिक्षा मिल सके किन्तु बम्बई में शिक्षा खर्च ज्यादा था। श्याम जी की पढ़ाई के प्रति लगन तथा उनकी प्रतिभा देखकर एक भाटिया व्यापारी को उन पर दया आ गई। जिसकी सहायता से उनको बम्बई में विल्सन हाई स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। इस प्रकार आधुनिक शिक्षा तथा बम्बई के माहौल से उनका परिचय हुआ। श्यामजी की लिखने पढ़ने में रुचि बढ़ती जा रही थी। उनकी प्रगति को देखकर उनके शिक्षक भी प्रसन्न थे।<sup>3</sup>

जिस धनी व्यापारी की सहायता से उनका प्रवेश विल्सन हाईस्कूल में हुआ था। उन्होंने श्याम जी कृष्ण वर्मा को संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कराने का निश्चय किया। उन्होंने पुरोहित वंश के विश्वनाथ शास्त्री को अपनी पाठशाला में श्याम जी को लेने के लिए तैयार किया। अब वह विल्सन हाई स्कूल भी जाते और संस्कृत पाठशाला भी पढ़ने के लिए जाते। उनके अंग्रेजी और संस्कृत दोनों विषयों के ज्ञान में वृद्धि होती गई। श्याम जी कृष्ण वर्मा की प्रतिभा से प्रभावित होकर उनको गोकुलदास काहनदास छात्रवृत्ति दे दी गई। छात्रवृत्ति मिल जाने से अब उन्होंने एलफिन्स्टन स्कूल में प्रवेश ले लिया।<sup>4</sup> इसी प्रकार अपने शैक्षिक जीवन को आगे बढ़ाते हुए उनको आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत के अध्यापक मोनियर विलियम्स 1875 ई० में भारत आये तो उन्होंने श्याम जी कृष्ण वर्मा को आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में बुलाने का निर्णय लिया। तभी वह एस० एस० सिन्धिया स्टीमर जलयान से इंग्लैंड के लिए रवाना हो गए।

वह आक्सफोर्ड पहुँचे जहाँ मोनियर विलियम्स की सहायता से एक परीक्षा देकर वलपोल (WALPOLE) कॉलेज में भर्ती हो गए।<sup>5</sup> श्यामजी को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का वातावरण बहुत अच्छा लगा। उन्होंने पाया कि अंग्रेजी शिक्षा

प्राप्त करते हुए बैरिस्टर की भी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। अतः उन्होंने इस दिशा में प्रयास शुरू कर दिया। बैरिस्टरी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए वह 'इनर टेम्पल इंस ॲफ कोर्ट' में भर्ती हो गए। इस प्रकार वह शिक्षण अध्ययन में द्रुत गति से लग गए। उन्हें धन की समस्या नहीं थी। वह एक छात्रवृत्ति तो मोनियर विलियम्स के द्वारा प्राप्त कर रहे थे। दूसरी उनकी प्रसिद्धी सुनकर

47	ISSN2277-3630(online), Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 13 Issue:12 in Dec-2024 <a href="https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR">https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR</a>
Copyright (c) 2023 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY). To view a copy of this license, visit <a href="https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/">https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/</a>	

कच्छ रियासत की ओर से 100 पौंड वार्षिक की एक अन्य छात्रवृत्ति प्राप्त हो गयी। मोनियर विलियम्स ने श्याम जी कृष्ण वर्मा की सहायता से आक्सफोर्ड में भारतीय संस्थान और पुस्तकालय बनाया। अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् वे संस्कृत के सहायक प्रोफेसर भी नियुक्त हुए। कुछ वर्षों के पश्चात् वे राजस्थान की उदयपुर रियासत में उच्च पद पर नौकरी करने लगे। 1893 ई० से 1895 ई० तक वे उदयपुर रियासत की स्टेंट कांसिल के सदस्य रहे। ब्रिटिश रेंजीडेट के दबाव के कारण उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ी। इसके बाद उनको जूनागढ़ राज्य में दीवान नियुक्त किया गया।<sup>6</sup>

### श्याम जी कृष्ण वर्मा की क्रांतिकारी गतिविधियाँ

श्याम जी कृष्ण वर्मा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख क्रांतिकारी थे, जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ सशस्त्र और वैचारिक संघर्ष को बढ़ावा दिया। उनकी क्रांतिकारी गतिविधियाँ मुख्य रूप से लंदन पेरिस और जिनेवा में केंद्रित थी। जहाँ उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को वैश्विक मंच पर ले जाकर औपनिवेशिक शक्तियों के खिलाफ एकजुटता स्थापित की। श्याम जी कृष्ण वर्मा की गतिविधियों ने न केवल भारतीय युवाओं को प्रेरित किया, बल्कि आयरलैंड और अफ्रीका जैसे अन्य स्वतन्त्रता आंदोलनों को भी प्रभावित किया। उनकी क्रांतिकारी गतिविधियाँ का क्रेंड इंडिया हाउस, इंडियन होमरूल सोसाइटी और पत्रिका 'द इंडियन सोशियोलाजिस्ट' थे।<sup>7</sup>

#### 1. इंडियन होमरूल सोसाइटी की स्थापना लंदन (1905 ई०)

लंदन में 18 फरवरी 1905 ई० को बीस भारतीयों ने मिलकर 'इंडियन होमरूल सोसाइटी' की स्थापना की। जिसका लक्ष्य भारत में स्वशासन की मांग को बढ़ावा देना था। यह आइरिश होमरूल मूवमेंट से प्रेरित था, लेकिन श्याम जी कृष्ण वर्मा का दृष्टिकोण पूर्ण स्वराज पर क्रेंड्रित था। जो भारतीय राष्ट्रीय क्रांत्रेस के उदारवादी दृष्टिकोण से भिन्न था। इस सोसाइटी के जो उद्देश्य रखे गए उनमें कहा गया था, 'भारतीयों के लिए भारतीयों के द्वारा, भारत सरकार की स्थापना' इस सोसाइटी का उद्देश्य था। यह भी निर्णय लिया गया था कि यह सोसाइटी इस तरह से कार्य करेगी जिससे भारतीय जनता में स्वतन्त्रता और राष्ट्रीय एकता के लाभों का विस्तार किया जाए।<sup>8</sup>

#### गतिविधियाँ:-

- इस सोसाइटी ने भारतीय स्वतन्त्रता के लिए वैचारिक और संगठनात्मक आधार तैयार किया।
- सभाएं और व्याख्यान आयोजित किए गए जिनमें ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना की गई।
- भारतीय छात्रों को क्रान्तिकारी विचारों से प्रेरित करने के लिए सामग्री वितरित की गई।

#### योगदान एवं महत्व:-

इस सोसाइटी ने भारतीय स्वशासन की अवधारणा को ब्रिटिश समाज में उठाया और भारतीय जनता के बीच भारतीय जनता के बीच जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इंडियन होमरूल सोसाइटी ने अन्तराष्ट्रीय मंच पर भारतीय मुद्दों को उजागर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह सोसाइटी इंडिया हाउस की गतिविधियों का आधार बनी और भारतीय स्वतन्त्रता को वैश्विक मंच पर ले गई। यह संगठन ब्रिटिश सरकार के लिए खतरे का प्रतीक बन गया।<sup>9</sup>

### इंडिया हाउस की स्थापना लंदन (1905 ई० - 1909 ई०)

1 जुलाई, 1905 को श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन के हाइगेट में 65 क्रोमबेल एवेन्यू में 'इंडिया हाउस' की स्थापना की। यह भारतीय छात्रों के लिए एक छात्रावास था, लेकिन इसका उद्देश्य क्रांतिकारी गतिविधियों का क्रेंड बनना था। जब इसका उद्घाटन हुआ तो ब्रिटेन के अनेक नेताओं के साथ दादाभाई नौराजी, लाला लाजपतराय व हेनरी हाइडमैन जैसे नेता उपस्थित थे। श्याम जी कृष्ण वर्मा के नेतृत्व में लंदन में भारतीयों का एक क्रेंड बन गया जहाँ भारतीय छात्र रहते थे और भारत की समस्याओं पर विचार-विमर्श होता था एवं भारत के स्वाधीनता आंदोलन को प्रशस्त करने के लिए योजनाएँ बनायी जाती थी।<sup>10</sup>

#### उद्देश्य:-

इंडिया हाउस का मुख्य उद्देश्य भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को ब्रिटिश सरकार के सम्मुख उजागर करना था। जहाँ भारतीय नेता और छात्र मिलकर भारत की स्वतन्त्रता के लिए योजना बना सके और क्रांतिकारी गतिविधियों को संचालित कर सके।

#### गतिविधियाँ:-

- क्रांतिकारी प्रशिक्षण: इंडिया हाउस में भारतीय छात्रों हथियार चलाने व बम बनाने और गुरिल्ला युद्ध की रणनीतियों की शिक्षा दी जाती थी।
- सभाएँ और व्याख्यान: नियमित सभाओं में भारतीय स्वतन्त्रता व औपनिवेशिक शोषण और क्रांतिकारी रणनीतियों पर चर्चा होती थी।
- क्रांतिकारी साहित्य: क्रांतिकारी सामग्री भारत और अन्य देशों में भेजी जाती थी। इंडिया हाउस ने विनायक दामोदर सावरकर व मदनलाल ढींगरा जैसे क्रांतिकारियों को प्रशिक्षित किया।

#### महत्व:-

इंडिया हाउस ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में सशस्त्र क्रांति के विचार को मजबूत किया और वैश्विक स्तर पर ब्रिटिश शासन के खिलाफ जागरूकता फैलाई। 1909 ई० के आस-पास इंडिया हाउस को ब्रिटिश सरकार ने बंद कर दिया क्योंकि यह भारतीय स्वतन्त्रता के नेताओं का एक प्रमुख केंद्र था और ब्रिटिश सरकार के लिए चिंता का विषय बन गया था।<sup>11</sup>

### द् इंडियन सोशियोलाजिस्ट पत्रिका का प्रकाशन (1905 ई०-1922 ई०)

श्याम जी कृष्ण वर्मा ने 1905 ई० में 'द् इंडियन सोशियोलाजिस्ट पत्रिका' की शुरुवात की, जिसका नाम हर्बट स्पेसर के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों से प्रेरित था। इस पत्रिका के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्यवाद की आलोचना एवम् भारतीय राष्ट्रवाद का प्रचार करना था। इस पत्रिका के बारे में यह कहा जाता था कि यह पत्रिका राजनीतिक सामाजिक तथा धार्मिक सुधार का मुख्य पत्र था। यह भारत तथा विदेशों में जहाँ-जहाँ भारतीय रहते थे भेजा जाता था। इस पत्रिका में भारतीय स्वतन्त्रता के संबंध में लेख छपते थे। जो क्रांतिकारी विचारों से ओत-प्रोत होते थे।

#### उद्देश्य :-

- **ब्रिटिश सरकार की आलोचना:** पत्रिका का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की नीतियों जैसे आर्थिक शोषण, सामाजिक अन्याय और सांस्कृतिक दमन की वैज्ञानिक और तार्किक आलोचना करना था। यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी दृष्टिकोण के विपरित सशस्त्र क्रांति और पूर्ण स्वराज की माँग पर जोर देता था।
- **भारतीय राष्ट्रवाद का प्रचार:** पत्रिका ने भारतीय संस्कृति इतिहास और दर्शन की श्रेष्ठता को प्रचारित किया ताकि भारतीयों में आत्मविश्वास और राष्ट्रीय गौरव जागे।
- **वैश्विक औपनिवेशिक विरोध:** पत्रिका ने आयरलैंड रूस और अफ्रीका जैसे अन्य औपनिवेशिक और क्रांतिकारी आंदोलनों के साथ एकजुटता स्थापित की। इसका उद्देश्य यूरोपीय बुद्धिजीवियों और जनता में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ जागरूकता फैलाना था।
- **क्रांतिकारी विचारों का प्रसार:** पत्रिका ने सशक्त क्रांति और प्रयत्क्ष कारवाही से विचारों को प्रोत्साहित किया जो इंडिया हाउस की गतिविधियों का समर्थन करता था।
- **शैक्षिक व वैचारिक जागरूकता:** हर्बट स्पेंशर के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के आधार पर पत्रिका ने औपनिवेशिक शासन को समाज की प्राकृतिक प्रगति में बाधक के रूप में प्रस्तुत किया।

#### प्रभाव:-

‘द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट’ ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और वैश्विक औपनिवेशिक विरोध पर गहरा प्रभाव डाला। पत्रिका ने सशस्त्र क्रांति के विचारों को प्रोत्साहित किया और भारतीय युवाओं को प्रेरित किया। इंडिया हाउस के क्रांतिकारियों विनायक दामोदर सावरकर और मदनलाल ढींगरा ने इस पत्रिका की विचारधारा को अपनाया। भारत में कांतिकारी संगठनों जैसे ‘अभिनव-भारत’ को इस पत्रिका से प्रेरणा मिली।

- **वैश्विक जागरूकता:** इस पत्रिका ने यूरोपीय बुद्धिजीवियों और जनता में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ जागरूकता फैलाई। आइरिश होमरूल मूवमेंट और रूसी क्रांतिकारियों के साथ वैचारिक एकजुटता स्थापित की।
- **ब्रिटिश शासन के लिए चुनौती:** पत्रिका की क्रांतिकारी साम्रगी ने ब्रिटिश सरकार को चिंतित किया। 1909 ई० में कर्जन विली की हत्या के बाद ब्रिटिश प्रशासन ने इसे और इंडिया हाउस को बंद करने के लिए कड़े कदम उठाए।
- **ट्रासनेसनल राष्ट्रवाद :** पत्रिका ने भारतीय स्वतन्त्रतां संग्राम को एक वैश्विक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया। जो अन्य देशों जैसे अफ्रीका में स्वतन्त्रतां की भावना से प्रेरित था।

‘द इंडियन सोशियोलॉजिस्ट’ नामक पत्रिका के प्रथम अंक में लिखा था - “No systematic attempt has ever been made by Indians. To enlighten the British public with regard to the grievances, demands and aspirations of the people of India. To plead the curse of India and its unrepresented millions before the Bar of public opinion in great Britain and Ireland. The Journal would be continue to Remind the British people that they can never succeed in being a nation of freedom and lovers of freedom so long as they continue to send out member of the dominating classes to exercise despotism in Britain name upon the various conquered races that constitute Britain is military power”<sup>12</sup>

50	ISSN2277-3630(online), Published by International journal of Social Sciences & Interdisciplinary Research., under Volume: 13 Issue:12 in Dec-2024 <a href="https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR">https://www.gejournal.net/index.php/IJSSIR</a>
Copyright (c) 2023 Author (s). This is an open-access article distributed under the terms of Creative Commons Attribution License(CCBY). To view a copy of this license, visit <a href="https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/">https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/</a>	

### पेरिस में श्याम जी कृष्ण वर्मा की क्रांतिकारी गतिविधियाँ (1907 ई०-1914 ई० )

श्याम जी कृष्ण वर्मा ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को वैश्विक मंच पर ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी पेरिस में गतिविधियाँ 1907 ई० से 1914 ई० की अवधि में केंद्रित थीं। जब वे ब्रिटिश सरकार के दबाव के कारण लंदन छोड़कर पेरिस गए थे। इस दौरान उन्होंने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को जारी रखा और भारतीय स्वतन्त्रता के लिए वैश्विक समर्थन जुटाने का प्रयास किया।

लंदन से पेरिस की यात्रा (1907 ई०) श्याम जी कृष्ण वर्मा को 1907 ई० में लंदन छोड़ना पड़ा क्योंकि ब्रिटिश सरकार उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों विशेष रूप से इंडिया हाउस और दूसरे इंडियन सोशियोलॉजिस्ट के माध्यम से रोकने के लिए दबाव बना रही थी। 1909 ई० में मदनलाल ढींगरा द्वारा कर्जन विली की हत्या के बाद ब्रिटिश खुफिया तंत्र ने इंडिया हाउस को बंद कर दिया और श्याम जी को पेरिस जाना पड़ा।<sup>13</sup>

#### पेरिस का महत्व:-

पेरिस उस समय क्रांतिकारियों और निवार्सितों का केंद्र था, जहाँ रूसी आयरिश और अन्य औपनिवेशिक विरोधी नेता सक्रिय थे। यह स्थान श्याम जी के लिए एक सुरक्षित और प्रभावी आधार बन गया क्योंकि उस समय फ्रांस, ब्रिटेन के साथ औपचारिक रूप से सहयोगी नहीं था।<sup>14</sup>

### जिनेवा में श्याम जी की प्रमुख गतिविधियाँ (1914 ई० -1922 ई०)

श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन पेरिस के बाद जिनेवा में अपनी क्रांतिकारी गतिविधियाँ जारी रखी। जिनेवा में उनकी गतिविधियाँ 1914 ई०-1930 ई० तक चलती रही। यह अवधि प्रथम विश्व युद्ध (1914 ई०-1918 ई०) और उसके बाद के समय से मेल खाती है। जब स्विट्जरलैंड की तटस्थिता ने उन्हें ब्रिटिश सरकार के दबाव से सुरक्षित रखा। जिनेवा में श्याम जी ने अपनी पत्रिका दूसरे इंडियन सोशियोलॉजिस्ट का प्रकाशन और वैश्विक क्रांतिकारी नेटवर्क का विस्तार व भारतीय स्वतन्त्रता के लिए समर्थन जुटाने का कार्य किया।

- **जिनेवा में आगमन :-** 1914 ई० में प्रथम विश्व युद्ध के प्रारंभ के साथ फ्रांस और ब्रिटेन के बीच सहयोग बढ़ गया। जिससे श्याम जी की स्थिति पेरिस में असुरक्षित हो गयी। जिनेवा उस समय क्रांतिकारी गतिविधियों और बौद्धिक चर्चा का केंद्र था। यहाँ रूसी आयरिश और अन्य क्रांतिकारी सक्रिय थे और स्विट्जरलैंड की तटस्थिता ने श्याम जी को अपनी गतिविधियाँ स्वतंत्र रूप से संचालित करने का अवसर दिया।
- **श्याम जी कृष्ण वर्मा और जर्मन समर्थन:-** श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन, पेरिस और जिनेवा में अपनी गतिविधियों के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ वैश्विक स्तर पर संघर्ष किया। प्रथम विश्व युद्ध (1914 ई०-1918 ई०) के दौरान उन्होंने जर्मन समर्थन का उपयोग भारतीय स्वतन्त्रता के लिए एक रणनीति के रूप में अपनाया। यह समर्थन हिंदू-जर्मन घड़यंत्र (Hindu-German conspiracy) का हिस्सा था। जिसमें भारतीय क्रांतिकारियों ने जर्मनी और अन्य ब्रिटिश विरोधी शक्तियों के साथ सहयोग करके ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह को बढ़ावा देने की कोशिश की।<sup>15</sup>

- प्रथम विश्व युद्ध के सर्वेभ में:-** प्रथम विश्व युद्ध (1914 ई० -1918 ई०) के दौरान जर्मनी और ब्रिटेन, मित्र-राष्ट्रों (Allies) और केंद्रीय शक्ति के रूप में एक-दूसरे के खिलाफ युद्ध में थे। जर्मनी ने ब्रिटिश साम्राज्य को कमज़ोर करने के लिए औपनिवेशिक देशों में विद्रोह को प्रोत्साहित की गणनीति अपनाई। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के क्रांतिकारी जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ रहे थे, जर्मनी के लिए एक अवसर थे।<sup>16</sup>

### जर्मनी में श्याम जी कृष्ण वर्मा की गतिविधियां

- जर्मन विदेश मंत्रालय के साथ संपर्क:** प्रथम विश्व युद्ध की शुरुवात के साथ जर्मन विदेश मंत्रालय (German foreign officer) ने भारतीय क्रांतिकारियों को समर्थन देने का निर्णय किया। श्याम जी (जो 1914 ई० में जिनेवा में थे) ने जर्मन सरकार के साथ संपर्क स्थापित किया। यह संपर्क बर्लिन समिति (Indian Independence Committee) के माध्यम से हुआ था, जिसमें उनके सहयोगी वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय शामिल थे। जर्मनी का लक्ष्य भारत में ब्रिटिश शासन को अस्थिर करना था, ताकि ब्रिटिश सेना के संसाधन युद्ध में कमज़ोर पड़े। श्याम जी ने इस अवसर का उपयोग करके भारतीय स्वतन्त्रता के लिए हथियार, धन और प्रचार सामग्री जुटाने के लिए किया। श्याम जी ने जिनेवा से जर्मन अधिकारियों के साथ पत्राचार किया और भारतीय क्रांतिकारियों के लिए समर्थन की माँग की इनका जर्मन संपर्क भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को वैश्विक स्तर पर ले जाने और ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक अंतरराष्ट्रीय गठबंधन बनाने का प्रयास था।<sup>17</sup>
- बर्लिन समिति के साथ सहयोग:** 1914 ई० में वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, अभिनाश भट्टाचार्य और अन्य भारतीय क्रांतिकारियों ने जर्मनी में बर्लिन समिति (भारतीय स्वतन्त्रता समिति) की स्थापना की। यह समिति जर्मन विदेश मंत्रालय के समर्थन से कार्य करती थी। जिसे जर्मन चांसलर थियोबोल्ड वॉन होल्वेग ने अधिकृत किया। श्याम जी ने जिनेवा से बर्लिन समिति के साथ समन्वय किया। चूँकि वे इंडिया हाउस के संस्थापक थे और चट्टोपाध्याय जैसे क्रांतिकारी उनके शिष्य थे। उनकी वैचारिक और रणनीतिक सलाह महत्वपूर्ण थी। उन्होंने 'बर्लिन समिति' को प्रचार सामग्री और वैचारिक समर्थन प्रदान किया।<sup>18</sup>

### निष्कर्ष:-

श्याम जी कृष्ण वर्मा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के उन असाधारण नायकों में से एक थे, जिन्होंने न केवल भारत में बल्कि वैश्विक मंच पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ साहसिक और दूरदर्शी संघर्ष किया। गुजरात के मांडवी में जन्मे श्याम जी ने अपनी शिक्षा और प्रेरणा स्वामी दयानंद सरस्वती और हर्बर स्पेंशर जैसे विचारकों से प्राप्त की जिसने उन्हें स्वराज और आत्मनिर्भरता की दृष्टि से जोड़ा। 1905 ई० में लंदन में इंडिया हाउस की स्थापना ने विनायक दामोदर सावरकर और मदनलाल ढीगरा जैसे क्रन्तिकारियों को प्रशिक्षित कर सशक्त क्रान्ति का आधार तैयार किया। उनकी पत्रिका 'द इंडियन सोशियोलाजिस्ट' ने ब्रिटिश शासन की वैज्ञानिक और तार्किक आलोचना कर भारतीय राष्ट्रवाद को यूरोप और विश्व के अन्य देशों में प्रचारित किया। 1907 ई० में पेरिस और 1914 ई० में आयरिशा, रूसी और जर्मन क्रांतिकारियों के साथ सहयोग स्थापित कर भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को एक ट्रांसनेशनल आदोलन बनाया। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हिंदू-जर्मन

षड्यंत्र में उनकी भूमिका विशेष रूप से जर्मन समर्थन के साथ विद्रोह की योजनाएँ, भले ही पूरी तरह सफल न हुई हो, लेकिन इन से ब्रिटिश शासन को गंभीर चुनौती मिली। श्याम जी के कार्यों का महत्व उनके क्रान्तिकारी प्रयासों तक सीमित नहीं था, उन्होंने भारतीय युवाओं में राष्ट्रीय गैरव और आत्म विश्वास जगाया। उनकी हर्बट स्पेंशर फेलोशिप ने युवाओं को सशक्त बनाया। फिर भी उनकी विरासत को मुख्यधारा के इतिहास में उपेक्षित किया गया। क्योंकि उनका सशक्त क्रांति का दृष्टिकोण उदारवादी विचारों से भिन्न था। आज जब हम आत्मनिर्भर भारत और वैश्विक सहयोग की बात करते हैं, तो श्याम जी कृष्ण वर्मा का स्वराज्य और वैश्विक एकजुटता का दृष्टिकोण अत्यन्त प्रासंगिक है। उनकी पत्रिका आज के डिजिटल मीडिया की तरह थी। जो वैश्विक जागरूकता फैलाती थी और उनका वैश्विक नेटवर्क BRICS और G-20 जैसे आधुनिक मर्चों की याद दिलाता है। श्याम जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची स्वतन्त्रता केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह वैश्विक एकजुटता और आत्म निर्भरता पर आधारित होती हैं।

### **सन्दर्भ-सूची:-**

1. आधुनिक भारत का इतिहास- सुमित सरकार, पेज न०-163, दिल्ली, 1998.
2. प्रवाशी क्रन्तिकारी, जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पेज न०-1
3. क्रांतिकारी आन्दोलन एक दस्तावेज- मन्मथनाथ गुप्त, पेज न०-53, दिल्ली, 1998.
4. सिंह बनारसी, आर्य क्रन्तिकारी, दिल्ली, 1974, पेज न०-28
5. भारतीय क्रन्तिकारी आन्दोलन का इतिहास- मन्मथनाथ गुप्त, पेज न०-20 दिल्ली, 1966.
6. भारतीय क्रन्तिकारी आन्दोलन का इतिहास- मन्मथनाथ गुप्त, पेज न०-56 दिल्ली, 1966.
7. दत्ता, बी.एन.-मदन लाल ढिंगरा एन्ड दा रिवोल्यूशनरी मूवमेंट, दिल्ली, 1978, पेज न०-9
8. इंडियन रिवोल्यूशनरी मूवमेंट एबरोड (1905-1921)- तिलक राज सरीन, पेज न०-2,3, दिल्ली, 1979.
9. Home Political File No- 18/1907, National Archives, New Delhi. पेज न०-2,3
10. India Office Record (British Library London 10R/R/1/1), National Archives, New Delhi.
11. Home Political File No- 18/1907, National Archives, New Delhi. पेज न०-2,3,5.
12. दि इण्डियन सोशियोलाजिस्ट: सितम्बर, 1907, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली |
13. Home Political File No- 21/1909, National Archives, New Delhi. पेज न०-255-57
14. Home Political File No- 299/1929, National Archives, New Delhi.
15. Home Political File No- 45/1914 -18, National Archives, New Delhi. पेज न०-33-35
16. Home Political File No- 45/1914 -18, National Archives, New Delhi.
17. German Foreign Office Record File, National Archives, New Delhi.
18. Home Political File No- 299/1929, National Archives, New Delhi. 185-87